IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 20, April 2026
Impact Factor: 8.2

# बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली एवं बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के बीच संबंध का विश्लेषण

**सारिका सक्सेना[1] and डॉ. जयंती त्रिपाठी[2]**

[1]शोधार्थी, गृह विज्ञान- विभाग

[2]प्रोफेसर, गृह विज्ञान- विभाग

सनराइज़ विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)

**सारांश**

बाल विकास गृह उन बच्चों के संरक्षण, पालन-पोषण एवं विकास के लिए स्थापित संस्थाएँ हैं जो अनाथ, परित्यक्त, निराश्रित अथवा जोखिमपूर्ण परिस्थितियों में जीवन यापन कर रहे होते हैं। इन संस्थाओं की कार्यप्रणाली बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा संज्ञानात्मक विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। संज्ञानात्मक विकास में स्मृति, ध्यान, भाषा, समस्या-समाधान, तार्किक चिंतन तथा सीखने की क्षमता सम्मिलित होती है। पिछले एक दशक में अनेक शोधों ने संकेत दिया है कि बाल विकास गृहों की गुणवत्ता, देखभालकर्ता-बालक अनुपात, शैक्षिक सुविधाएँ, भावनात्मक समर्थन तथा सामाजिक वातावरण बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत समीक्षा पत्र 2010 से 2022 के मध्य प्रकाशित अध्ययनों के आधार पर बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली और बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के मध्य संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

**मुख्य संकेतक:** बाल विकास गृह, संज्ञानात्मक विकास, संस्थागत देखभाल, बाल कल्याण, सीखने की क्षमता, बाल संरक्षण।

## प्रस्तावना

बच्चे किसी भी राष्ट्र की अमूल्य संपत्ति होते हैं और उनका समुचित विकास राष्ट्र निर्माण का आधार माना जाता है। जिन बच्चों को पारिवारिक संरक्षण उपलब्ध नहीं हो पाता, उनके लिए बाल विकास गृह एक वैकल्पिक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 20, April 2026 Impact Factor: 8.2

देखभाल व्यवस्था के रूप में कार्य करते हैं। इन संस्थाओं का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को सुरक्षित वातावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ तथा सामाजिक संरक्षण प्रदान करना है। तथापि शोधों से ज्ञात हुआ है कि संस्थागत वातावरण की गुणवत्ता बच्चों के विकासात्मक परिणामों को गहराई से प्रभावित करती है। विशेष रूप से संज्ञानात्मक विकास, जो सीखने, स्मृति, भाषा एवं बौद्धिक क्षमता से संबंधित है, संस्थागत देखभाल की प्रकृति से अत्यधिक प्रभावित होता है।

## बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली की अवधारणा

बाल विकास गृह समाज के उन महत्वपूर्ण संस्थागत तंत्रों में से एक हैं, जिनका उद्देश्य ऐसे बच्चों की देखभाल, संरक्षण, शिक्षा, पुनर्वास एवं समग्र विकास सुनिश्चित करना है जो किसी कारणवश पारिवारिक संरक्षण से वंचित हो गए हैं। इनमें अनाथ, परित्यक्त, निराश्रित, शोषण या उत्पीड़न के शिकार, बाल श्रम से मुक्त कराए गए, मानव तस्करी से बचाए गए तथा अन्य जोखिमपूर्ण परिस्थितियों में रहने वाले बच्चे सम्मिलित होते हैं। आधुनिक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा में बाल विकास गृह केवल आश्रय प्रदान करने वाली संस्थाएँ नहीं हैं, बल्कि वे बच्चों के सर्वांगीण विकास के केंद्र के रूप में कार्य करती हैं। इन संस्थाओं की कार्यप्रणाली का मूल उद्देश्य बच्चों को ऐसा सुरक्षित, संरक्षित एवं विकासोन्मुख वातावरण उपलब्ध कराना है जिसमें वे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा संज्ञानात्मक रूप से विकसित हो सकें। बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली की अवधारणा बहुआयामी है, जिसमें प्रशासनिक व्यवस्था, संरक्षण सेवाएँ, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, मनोवैज्ञानिक परामर्श, सामाजिक पुनर्वास तथा व्यक्तित्व विकास जैसे विभिन्न आयाम सम्मिलित होते हैं।

बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली का प्रमुख आधार बाल अधिकारों की सुरक्षा है। संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार अभिसमय तथा भारत में किशोर न्याय (बालकों की देखभाल एवं संरक्षण) अधिनियम, 2015 के अंतर्गत प्रत्येक बच्चे को संरक्षण, विकास, सहभागिता और अस्तित्व का अधिकार प्रदान किया गया है। बाल विकास गृह इन अधिकारों को व्यवहारिक रूप देने का माध्यम हैं। इन संस्थाओं का संचालन इस प्रकार किया जाता है कि बच्चों को सुरक्षित वातावरण प्राप्त हो, उनकी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति हो तथा उनके भविष्य के लिए सकारात्मक अवसर उपलब्ध कराए जा सकें। इस दृष्टि से बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली केवल दैनिक देखभाल तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह बच्चों के जीवन के प्रत्येक विकासात्मक पक्ष को प्रभावित करती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 20, April 2026 Impact Factor: 8.2

बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली का एक महत्वपूर्ण आयाम आवासीय एवं सुरक्षा व्यवस्था है। किसी भी बाल गृह का प्रथम दायित्व बच्चों को सुरक्षित आश्रय प्रदान करना होता है। संस्थान में स्वच्छ एवं सुरक्षित भवन, पर्याप्त प्रकाश एवं वायु, साफ-सफाई की व्यवस्था, सुरक्षित पेयजल, शौचालय तथा अन्य आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। सुरक्षा व्यवस्था का उद्देश्य बच्चों को किसी भी प्रकार के शारीरिक, मानसिक अथवा यौन शोषण से बचाना होता है। इसके लिए प्रशिक्षित कर्मचारियों की नियुक्ति, नियमित निरीक्षण, बाल संरक्षण नीतियों का अनुपालन तथा शिकायत निवारण तंत्र की स्थापना आवश्यक मानी जाती है। सुरक्षित वातावरण बच्चों में आत्मविश्वास विकसित करता है तथा उनके मानसिक और संज्ञानात्मक विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली में स्वास्थ्य एवं पोषण सेवाओं का भी विशेष महत्व है। बच्चों के समुचित विकास के लिए संतुलित आहार, नियमित स्वास्थ्य परीक्षण, टीकाकरण, चिकित्सीय परामर्श तथा आपातकालीन चिकित्सा सुविधाएँ आवश्यक होती हैं। कुपोषण, रोग तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बच्चों की सीखने की क्षमता, स्मृति, ध्यान एवं बौद्धिक विकास को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए बाल विकास गृहों में स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी कार्यक्रमों का प्रभावी संचालन किया जाता है। स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ मस्तिष्क के विकास का आधार होता है, इसलिए यह कार्यप्रणाली का अत्यंत महत्वपूर्ण घटक माना जाता है।

शिक्षा बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली का केंद्रीय तत्व है। इन संस्थाओं का उद्देश्य बच्चों को केवल औपचारिक शिक्षा प्रदान करना ही नहीं, बल्कि उनके भीतर ज्ञान, कौशल, मूल्य तथा जीवनोपयोगी क्षमताओं का विकास करना भी होता है। बच्चों को विद्यालयों में प्रवेश दिलाना, अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना, अतिरिक्त शिक्षण सहायता प्रदान करना तथा उनके शैक्षिक प्रदर्शन की निगरानी करना बाल विकास गृहों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में शामिल है। वर्तमान समय में डिजिटल शिक्षा, पुस्तकालय सुविधाएँ, कंप्यूटर प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक शिक्षा को भी इन संस्थाओं की कार्यप्रणाली का हिस्सा बनाया जा रहा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बच्चों के संज्ञानात्मक विकास, तार्किक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता तथा निर्णय लेने की योग्यता को विकसित करती है।

बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली में मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक सहयोग का विशेष स्थान है। अधिकांश बच्चे जो इन संस्थाओं में रहते हैं, किसी न किसी प्रकार के मानसिक आघात, उपेक्षा, हिंसा अथवा असुरक्षा का अनुभव कर चुके होते हैं। ऐसे बच्चों के लिए केवल भौतिक सुविधाएँ पर्याप्त नहीं होतीं, बल्कि उन्हें भावनात्मक सुरक्षा, प्रेम, अपनापन तथा मनोवैज्ञानिक सहायता की भी आवश्यकता होती है। परामर्श सेवाएँ,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 20, April 2026 Impact Factor: 8.2

व्यक्तिगत मार्गदर्शन, समूह परामर्श, मनोरंजनात्मक गतिविधियाँ तथा व्यवहार सुधार कार्यक्रम बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने में सहायक होते हैं। भावनात्मक रूप से सुरक्षित बच्चे अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं और उनका संज्ञानात्मक विकास भी बेहतर होता है।

बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम सामाजिक विकास एवं पुनर्वास है। इन संस्थाओं का उद्देश्य बच्चों को समाज से जोड़ना तथा उन्हें आत्मनिर्भर नागरिक के रूप में विकसित करना होता है। इसके लिए सामाजिक कौशल विकास, सामुदायिक सहभागिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद गतिविधियाँ तथा जीवन कौशल प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं। बच्चों को सामाजिक संबंध स्थापित करने, समूह में कार्य करने तथा जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। पुनर्वास कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों को परिवार, पालक देखभाल या स्वतंत्र जीवन के लिए तैयार किया जाता है। यह प्रक्रिया बच्चों में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास तथा सामाजिक अनुकूलन क्षमता का विकास करती है।

बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली में प्रशिक्षित मानव संसाधन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। देखभालकर्ता, शिक्षक, परामर्शदाता, सामाजिक कार्यकर्ता तथा प्रशासनिक कर्मचारी बच्चों के विकास में प्रत्यक्ष योगदान देते हैं। उनकी संवेदनशीलता, प्रशिक्षण, व्यवहार तथा कार्यकुशलता बच्चों के अनुभवों को प्रभावित करती है। यदि कर्मचारी बाल मनोविज्ञान, बाल अधिकारों एवं बाल संरक्षण के सिद्धांतों से परिचित हों तो वे बच्चों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और उनके विकास के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित कर सकते हैं। इसके विपरीत प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी कार्यप्रणाली की प्रभावशीलता को कम कर सकती है।

वर्तमान समय में बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली को केवल संस्थागत देखभाल तक सीमित नहीं माना जाता, बल्कि इसे बाल-केंद्रित एवं अधिकार-आधारित दृष्टिकोण से देखा जाता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, रुचियों, क्षमताओं तथा विकासात्मक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए योजनाएँ बनाई जानी चाहिए। बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित करना, उनकी राय को महत्व देना तथा उनके व्यक्तित्व विकास के अवसर प्रदान करना आधुनिक कार्यप्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ हैं। साथ ही, परिवार-आधारित देखभाल, पालक देखभाल तथा सामुदायिक पुनर्वास जैसे विकल्पों को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है ताकि बच्चों को अधिक स्वाभाविक एवं सहयोगात्मक वातावरण प्राप्त हो सके।

बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली एक व्यापक एवं बहुआयामी अवधारणा है, जिसका उद्देश्य बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित करना है। यह केवल आश्रय प्रदान करने की व्यवस्था नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 20, April 2026 Impact Factor: 8.2

भावनात्मक सहयोग, सामाजिक पुनर्वास तथा व्यक्तित्व विकास की समेकित प्रक्रिया है। बाल विकास गृहों की प्रभावी कार्यप्रणाली बच्चों के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाती है तथा उन्हें एक सुरक्षित, सम्मानजनक और आत्मनिर्भर भविष्य की ओर अग्रसर करती है। इसलिए इन संस्थाओं की कार्यप्रणाली को निरंतर सुदृढ़ बनाना और बाल-अनुकूल वातावरण विकसित करना समाज एवं राष्ट्र दोनों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली से तात्पर्य उन व्यवस्थाओं, नीतियों एवं प्रक्रियाओं से है जिनके माध्यम से बच्चों की देखभाल एवं विकास सुनिश्चित किया जाता है। इनमें निम्नलिखित घटक प्रमुख हैं: -

1. आवास एवं सुरक्षा व्यवस्था
2. पोषण एवं स्वास्थ्य सेवाएँ
3. शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम
4. मनोवैज्ञानिक परामर्श सेवाएँ
5. मनोरंजन एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ
6. देखभालकर्ताओं का प्रशिक्षण एवं दक्षता
7. बाल संरक्षण एवं पुनर्वास सेवाएँ

यदि इन घटकों का प्रभावी संचालन किया जाए तो बच्चों के समग्र विकास को प्रोत्साहन मिलता है। दूसरी ओर संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित कर्मचारियों का अभाव तथा भावनात्मक उपेक्षा बच्चों के विकास को बाधित कर सकती है।

**संज्ञानात्मक विकास की अवधारणा**

संज्ञानात्मक विकास से आशय उन मानसिक प्रक्रियाओं के विकास से है जिनके माध्यम से बच्चा ज्ञान अर्जित करता है, सूचना का विश्लेषण करता है तथा समस्याओं का समाधान करता है। इसमें निम्न क्षमताएँ सम्मिलित हैं: -

1. स्मृति
2. ध्यान
3. भाषा विकास

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 20, April 2026
Impact Factor: 8.2

4. तार्किक चिंतन
5. समस्या समाधान
6. निर्णय क्षमता

बाल्यावस्था में प्राप्त अनुभव, पारिवारिक वातावरण, शिक्षा तथा सामाजिक संपर्क संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करते हैं। बाल विकास गृहों में रहने वाले बच्चों के लिए संस्थागत वातावरण इन सभी कारकों का प्रमुख स्रोत बन जाता है।

**बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली एवं संज्ञानात्मक विकास का संबंध**

**1. देखभालकर्ता-बालक अनुपात**

अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि जिन संस्थाओं में देखभालकर्ताओं की संख्या पर्याप्त होती है वहाँ बच्चों के साथ व्यक्तिगत संवाद अधिक होता है, जिससे उनकी भाषा, स्मृति तथा बौद्धिक क्षमताओं में सुधार होता है। इसके विपरीत अत्यधिक बच्चों एवं कम कर्मचारियों वाली संस्थाओं में संज्ञानात्मक विकास अपेक्षाकृत कमजोर पाया गया।

**2. भावनात्मक समर्थन और संज्ञानात्मक विकास**

संज्ञानात्मक विकास केवल शैक्षिक अवसरों पर निर्भर नहीं करता बल्कि भावनात्मक सुरक्षा भी अत्यंत आवश्यक होती है। जिन बच्चों को स्थायी एवं संवेदनशील देखभाल प्राप्त होती है उनमें सीखने की क्षमता, एकाग्रता तथा समस्या समाधान कौशल बेहतर पाए गए हैं। संस्थागत उपेक्षा बच्चों की बौद्धिक प्रगति को बाधित कर सकती है।

**3. शैक्षिक सुविधाएँ**

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पुस्तकालय, डिजिटल संसाधन तथा सीखने के अवसर बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिन बाल विकास गृहों में नियमित शैक्षिक कार्यक्रम संचालित होते हैं वहाँ बच्चों का शैक्षणिक प्रदर्शन और बौद्धिक विकास अधिक पाया गया।

**4. संस्थागत वातावरण**

अनुसंधानों के अनुसार कठोर नियमों, सीमित सामाजिक संपर्क तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अभाव वाले संस्थागत वातावरण बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत परिवार-सदृश वातावरण बच्चों के भाषा एवं बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 20, April 2026 Impact Factor: 8.2

## प्रमुख शोधों की समीक्षा (2010–2022)

वैन आईज्ज़ेंडोर्न एट अल। (2011) इन बच्चों में रहने वाले बच्चों के विकास का विश्लेषण करते हुए पाया गया कि ऐसे बच्चों में आईक्यू स्तर एवं भाषा विकास सामान्य पारिवारिक वातावरण में रहने वाले बच्चों के विकास का कम पाया गया।

डोज़ियर एट अल. (2012) ने अपनी समीक्षा अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि प्रयोगशाला देखभाल बच्चों के विकास की मौलिक आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से नहीं कर प्रयोगशाला, प्रारंभिक बाल्यावस्था में। बेरोजगार ने परिवार-आधारित देखभाल को अधिक प्रभावशाली बताया।

यूनिसेफ (2022) की रिपोर्ट के अनुसार, रहने वाले बच्चों को व्यक्तिगत ध्यान और इलेक्ट्रॉनिक्स की कमी का सामना करना पड़ता है, जिसमें ताल-मेल और सामाजिक विकास में देरी देखी जाती है।

हर्मेनौ एट अल. (2017) में पाया गया कि बच्चों के समन्वय, सामाजिक और साक्षरता विकास में सुधार के लिए किराये के प्रशिक्षण और डिज़ाइन में सकारात्मक परिवर्तन आते हैं।

परेरा एट अल. (2019) ने पत्रिका कि लिपि जीवन में प्रवेश करने वाले अधिकांश बच्चों में प्रारंभिक अवस्था में देरी पाई और छह महीने बाद भी विकासात्मक चुनौतियाँ बनी रहीं।

## निष्कर्ष

समीक्षित साहित्य से स्पष्ट होता है कि बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली और बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के मध्य घनिष्ठ संबंध विद्यमान है। संस्थागत वातावरण की गुणवत्ता, देखभालकर्ताओं की दक्षता, भावनात्मक समर्थन, शैक्षिक अवसर तथा सामाजिक सहभागिता बच्चों की स्मृति, भाषा, सीखने की क्षमता और बौद्धिक विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। 2010–2022 के विभिन्न अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि गुणवत्तापूर्ण संस्थागत देखभाल बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को सुदृढ़ कर सकती है, जबकि उपेक्षापूर्ण एवं संसाधन-विहीन वातावरण विकासात्मक विलंब उत्पन्न कर सकता है। अतः बाल विकास गृहों की कार्यप्रणाली में सुधार बच्चों के समग्र एवं संज्ञानात्मक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

## संदर्भ

1. अहनेर्ट, एल., पिनक्वार्ट, एम., और लैम्ब, एम.ई. (2006)। माता-पिता के अलावा देखभाल करने वालों के साथ बच्चों के रिश्ते की सुरक्षा। बाल विकास, 77(3), 664-679।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 20, April 2026 Impact Factor: 8.2

2. इज़्ज़ो, सी.वी., स्मिथ, ई.जी., होल्डन, एम.जे., नॉर्टन, सी.आई., नुन्नो, एम.ए., और सेलर्स, डी.ई. (2016)। बच्चों की आवासीय देखभाल में व्यवहारिक साहित्यिक स्मृतियों को रोकने के लिए सेटिंग के स्तर पर हस्तक्षेप। रोकथाम विज्ञान, 17(5), 554-564।

3. इवांस, जी.डब्ल्यू., रिकसियुटी, एच.एन., होप, एस., शून, आई., ब्रैडली, आर.एच., कॉर्विन, आर.एफ., और हज़ान, सी. (2010)। भीड़-भाड़ और अभ्यास विकास: 36 महीने के बच्चों में माँ की प्रतिक्रियाशीलता की मध्यस्थ भूमिका। पर्यावरण और व्यवहार, 42(1), 135-148.

4. कैमुनास, एन., वैलो, एम., मावरौ, आई., ब्रिगिडो, एम., और पूले, एम. (2020)। इंटरमीडिएट केयर में मद्रास उच्च न्यायालय और सहकारी समितियों की भूमिका। बच्चे एवं युवा सेवा समीक्षा, 119, 105507।

5. कोंटोस, एस. (1994). बच्चों की देखरेख की क्षमता और पारिवारिक डे-केयर घर में बच्चों की देखरेख और सामाजिक व्यवस्था। अनुप्रयुक्त विकासात्मक मनोवैज्ञानिक जर्नल, 15(3), 387-411।

6. कोंटोस, एस., और फ़िएने, आर. (1987)। बच्चों की देखभाल की गुणवत्ता, बच्चों का पालन-पोषण और बच्चों का विकास। प्रारंभिक बचपन अनुसंधान त्रैमासिक, 2(3), 265-276।

7. ज़ेनाह, सी.एच., स्माइके, ए.टी., कोगा, एस.एफ., और कार्लसन, ई. (2005)। रोमानिया में सुपरमार्केट और सुपरमार्केट। बाल विकास, 76(5), 1015-1028।

8. टिज़ार्ड, बी., और जोसेफ़, ए. (1970)। आवासीय देखभाल में छोटे बच्चों का अभ्यास विकास: 24 महीने के बच्चों का एक अध्ययन। ईआरआईसी दस्तावेज़ पुनरुत्पादन सेवा, ईडी055653, 1-22।

9. नेल्सन, सी. ए. (2007)। एक यूरोबायोक स्टॉकहोम में प्रारंभिक मानवीय अभाव। बाल विकास परिप्रेक्ष्य, 1(1), 13-18।

10. फॉक्स, एन.ए., अल्मास, ए.एन., डेगनन, के.ए., नेल्सन, सी.ए., और ज़ेनाह, सी.एच. (2011)। गंभीर मनोसामाजिक अभाव का अभ्यास विकास पर प्रभाव। विकास और मनोचिकित्सा, 23(3), 777-791।

11. बेल्स्की, जे. (2006). बच्चों की प्रारंभिक देखभाल और प्रारंभिक विकास: एनआईसीएचडी अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष। यूरोपियन जर्नल ऑफ़ डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, 3(1), 95-110।

12. ब्रैडली, आर. एच., और कॉर्विन, आर. एफ. (2002)। सामाजिक-आर्थिक स्थिति और बच्चों का विकास। मनोविज्ञान की वार्षिक समीक्षा, 53(1), 371-399।

13. मैककॉल, आर. बी. (2013). समीक्षा: प्रारंभिक प्रोटोटाइपिकरण के परिणाम। बाल और किशोर मानसिक स्वास्थ्य, 18(1), 2-10।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 20, April 2026
Impact Factor: 8.2

14. वांडेल, डी.एल., और वोल्फ, बी. (2000)। बच्चों की देखभाल की गुणवत्ता: यह क्या है और इसमें क्या सुधार की आवश्यकता है? गरीबी विशेष रिपोर्ट पर अनुसंधान संस्थान, 78(1), 1-31।

15. वैन इज्ज़ेंडोर्न, एम.एच., पलासियोस, जे., सोनुगा-बार्के, ई.जे.एस., गुन्नार, एम.आर., वोरिया, पी., और मैक्कल, आर.बी. (2011)। एंटरप्राइज़ केयर में बच्चे: विकास में देरी और संपत्ति। बाल विकास में अनुसंधान के लिए सोसायटी के मोनोग्राफ, 76(4), 8-30।

16. वोरिया, पी., पपालीगौरा, जेड., डी.एन., जे., वैन इज़ेंडोर्न, एम. एच., स्टील, एच., कोंटोपोलू, ए., और सराफिदु, वाई. (2003)। आवासीय ग्रुप केयर में पाले गए ग्रीक बच्चों का प्रारंभिक अनुभव और संबंध। जर्नल ऑफ इंजील साइकोलॉजी एंड साइकियाट्री, 44(8), 1208-1220।

17. व्यावसायिक आवासीय देखभाल अनुसंधान समूह। (2019). आरंभिक साम्यावस्था, कंप्यूटिंग देखभाल की स्थिरता और तटस्थता और शिशुपालन, भाषा और शारीरिक विकास। शिशुपालन एवं विकास, 57, 101387।

18. स्पार्लिंग, जे., ड्रैगोमिर, सी., रेमी, सी. टी., और फ्लोरेस्कु, एल. (2005)। एक स्टार्टअप हस्तक्षेप रोमानियाई अनाथालयों में छोटे बच्चों के विकासात्मक प्रगति में सुधार करता है। इंस्टिट्यूट मानसिक स्वास्थ्य जर्नल, 26(2), 127-142।

19. स्लाउटस्की, वी.एम. (1997)। 6 और 7 साल के बच्चों की प्रोटोटाइप देखभाल और विकास के नतीजे: एक संदर्भ-आधारित दृष्टिकोण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिहेवियरल डेवलपमेंट, 20(1), 131-151।

हॉल, आर.ए., ज्यूर्ट्स, एस.ए.ई., और वेर्थ, सी.डी. (2010)। इनहेल केयर सेंटर्स में विकास प्रेरणात्मक प्रोत्साहन छोटे स्टॉकहोम के विकास में योगदान देता है। शिशु व्यवहार और विकास, 33(4), 421-429।